



What is Arya Samaj?

Arya Samaj is an institution founded by Maharishi Dayanand Saraswati based on the universal teachings of the Vedas. It is an organisation propagating universal message of the Vedas for the benefit of the entire humanity.

ARYAN VOICE

YEAR 37

16/2015-16

MONTHLY

October 2015

Tickets on Sale Now.....

Charity Dinner

An evening of Bolloywood nite with Mr Hitesh and Mrs

Rama Jobanputra and Live Band

Saturday 7th November 2015

6.30pm.

At

Arya Samaj West Midlands.

This will be a ticketed event in order to raise funds for our Arya Samaj. (Please see page 19 for detailed information)

TEL: 0121 359 7727 E-mail- enquiries@arya-samaj.org

ARYA SAMAJ (Vedic Mission) WEST MIDLANDS

(Charity Registration No. 1156785)

188 INKERMAN STREET (OFF ERSKINE STREET), NECHELLS,

BIRMINGHAM B7 4SA

Website: www.arya-samaj.org

CONTENTS

10 Principles of Arya Samaj	3
Nine Pillars of Thoughts for Three Threads of Yajnopaveet	by Krishan Chopra 4
१२ वाँ सँस्कार- समावर्त्तन सँस्कार	आचार्य डॉ. उमेश यादव 6
वेद-कथा (रक्षावन्धन, कृष्ण-जन्माष्टमी एवं पातँजल-योग) तथा गायत्री महायज्ञ -2015	आचार्य डॉ. उमेश यादव 12
Celebration of Independence Day of India	16
Vedic Matrimonial Get-Together	18
Charity Dinner & Dance	19
News (पारिवारिक समाचार)	20
D.A.V. Advert - Experienced Head Teacher wanted.	24

**For General and Matrimonial Enquiries
Please Ring
Miss Raji (Rajashree) Chauhan (Office Manager)
Monday: - 1pm-5pm
Tuesday to Friday between: - 2.30pm to 6.30pm,
Wednesday: - 11.00am to 1.00pm.
Bank Holidays – Closed - Tel. 0121 359 7727
E-mail- enquiries@arya-samaj.org**

10 Principles of Arya Samaj

- 1. God is the primary source of all true knowledge and all that is known by its means.(At the beginning of creation, nearly 2 Billion years ago, God gave the knowledge of 4 Vedas to four learned Rishis named Agni, Vayu, Aditya and Angira. Four Vedas called Rigved, Yajurved, Samved and Atharva Ved contain all true knowledge,spiritual and scientific, known to the world.)**
- 2. God is existent, intelligent and blissful. He is formless, omnipotent, just, merciful, unborn, infinite, invariable (unchangeable), having no beginning, matchless (unparalleled), the support of all, the master of all, omnipresent, omniscient, ever young (imperishable), immortal, fearless, eternal, holy and creator of universe. To him alone worship is due.**
- 3. Vedas are the scripture of all true knowledge. It is paramount duty of all Aryan to read them, teach and recite them to others.**
- 4. All human beings should always be ready to accept the truth and give up untruth.**
- 5. All our actions should be according to the principles of Dharma i.e. after differentiating right from wrong.**
- 6. The primary aim of Arya Samaj is to do good to the human beings of whole world i.e. to its physical, spiritual and social welfare.**
- 7. All human beings ought to be treated with love, justice and according to their merits as dictated by Dharma.**
- 8. We should all promote knowledge (Vidya) and dispel ignorance (Avidya).**
- 9. One should not be content with one's own welfare alone but should look for one's welfare in the welfare of all others.**
- 10. In matters which affect the well being of all people an individual should subordinate any personal rights that are in conflict with the wishes of the majority. In matters that affect him/her alone he/she is free to exercise his/her human rights.**

Nine Pillars of Thoughts for Three Threads of Yajnopaveet

नव प्राणान् नवभिः संमिमीते दीर्घायुत्वाय शतशारदाय ।

ह ऋते त्रीणि रजते त्रीणि अयसि त्रीणि तपसा विशिथ तानि ॥ ५.२८.१

**Nava praanaan navabhih sam mimeete deerghayutvaaya shata
shaardaaya I harite treeni rajate treeni ayasi treeni tapasaa
vishithataani II**

Athrva Veda

5.28.1

Meaning in Text Order

Nava = nine

Praanaan = vital breath

Navabhih= through nine organs

Sam mimeete=keep them in balance

Deerghaayutvaaya = for the longevity of life

Shata shaardaaya = for hundred autumn

Harite = golden

Treeni = three

Rajate = silver

Ayasi = iron

Trini = three

Tapasa = through penance

Vishthitaani = are placed.

Meaning

We should practice breathing exercises to strengthen our organs for the longevity of our life for so we can live a hundred years. The

three threads which represent gold, silver and iron are established through penance.

Contemplation

In the world, there are many kinds of symbols, some are national, some are religious and there are also cultural symbols. These symbols are according to their culture and sacraments. The Sacred Thread (**yajnopavit**) is the symbol of Vedic culture. As Vedic Culture is a universal culture so its symbol the Sacred Thread is also a universal symbol of education. Every child is born with an umbilical cord which is given by God. Through this cord the baby is connected with the mother in the womb.

There are three threads in the **yajnopavit** and on the top there is a knot of Aum which is also known as **brahma granthi** . These three threads represent gold, silver and iron. We call them the gold thread, silver thread and iron thread. Though these threads are made of cotton the bearer should think they are made of gold, silver and iron. As gold is radiant, luminous and brilliant, we try to have the same qualities of gold. The silver is delicate and soft, may we also become calm like silver. As iron is robust and sturdy, we try to become strong like iron.

Gold, silver and iron are also symbols of **satva**, rajas and **tamasa**. We try to keep them in balance proportion in our life. **Satva** gives us light, **rajasa** gives us activeness and **tamasa** gives us the power of determination. There are in total nine threads which are established with penance. The bearer maintains the balance with nine vital breaths.

The three threads of **yajnopavit** help to bring us knowledge, action and meditation. They inspire us to do good for others without selfish motive, to study and be charitable. They also help to bring in us the spirit of listening, contemplation and meditation.

by **Krishan Chopra**

१२ वाँ सँस्कार- समावर्त्तन सँस्कार

आचार्य डॉ. उमेश यादव

शिक्षा-समाप्ति के बाद गृहस्थाश्रम धारण करने के लिये जब ब्रह्मचारी विद्यालय छोड़कर घर आता है तब उसका समावर्त्तन सँस्कार किया जाता है। यह विवाह से पूर्व का सँस्कार है। जब एक ब्रह्मचारी महा विद्यालयीय, विश्वविद्यालयीय आदि उच्च शिक्षा किसी विद्या व कला-कौशल विशेष में शिक्षा पूरा करके घर आता है और उसे विवाह की भी ईच्छा हो तभी इस सँस्कार का आयोजन होता है। वस्तुतः यह ब्रह्मचर्य-व्रत-पूर्ति और विवाह-व्रत का प्रारम्भ सँस्कार है। समावर्त्तन का अर्थ है-घर की ओर आना। जहाँ से विद्यार्जन के लिये निकले थे, वहीं अब विद्या-समाप्ति के बाद घर वापस आ रहे हैं; यही समावर्त्तन है। महर्षि दयानन्द की दृष्टि में यह सँस्कार आचार्य-गृह या पितृ-गृह दोनों में कहीं भी सुविधानुसार हो सकता है। वेदारम्भ और समावर्त्तन दोनों ही विशेष रूप से ब्रह्मचारी के लिये ऐसे उपदेशात्मक सँस्कार हैं जो उसे गृहस्थ को वाखूबी पहचानने का एक सुन्दर समय उपस्थित करते हैं। यहीं एक स्वस्थ, सुखी और सफल गृहस्थ बन सकने का व्रत जीवन का मुख्याधार बन जाता है। वेदारम्भ सँस्कार में ब्रह्मचारी ५-८ वर्ष की अवस्था में घर छोड़कर आचार्य के पास आता है। तब आचार्य उसे गुरुकुल में रहने के लिये सब व्यवहारों को स्पष्ट करता हुआ उपदेश करता है पर समावर्त्तन सँस्कार में जब ब्रह्मचारी पढ़ कर घर आता है तब उसे घर-परिवार, समाज, राष्ट्र व दुनियाँ में सफल होने का व्यावहारिक उपदेश देता है। आचार्य तो हर वक्त ब्रह्मचारी का कल्याण ही करता है। जरा ध्यान तो दीजिए- दोनों उपदेशों में लगभग १४-१६ वर्ष का ही अन्तर है। पहले में प्रारम्भिक कोमल मस्तिष्क है पर दूसरे में परिपक्व अवस्था का मस्तिष्क है। दोनों का प्रभाव अपने-अपने समय में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। ब्रह्मचारी दोनों कालों के उपदेशों को जब निष्ठा से अमल करता है तो निश्चय ही उसका सफल जीवन बनता है। अब हम विधि-भाग को समझें-

समावर्तन संस्कार में निम्न प्रक्रियाओं के साथ विधि सम्पन्न होती है । यह एक यज्ञात्मक विधि है जिसमें इस प्रकार के आयाम हैं-

१. स्नातक ब्रह्मचारी का स्वागत-पादय, अर्घ्य, आचमनीय, मधुपर्क आदि ।
२. ऋत्विक् वरण, यज्ञारम्भ तथा सामान्य हवन ।
३. अग्नि-ताप, अँग-स्पर्श आदि ।
४. मंगलाभिषेक (स्नान) ।
५. मेखला-दण्ड-त्याग ।
६. परमात्मा का उपस्थान ।
७. दधि-तिल का खाना, जटा, लोम, नख-वपन/छेदन, उदम्बर का दन्त-धावन (यथा सम्भव जो उपलब्ध हो), सुगन्धित द्रव्य के साथ उबटन प्रयोग व स्नान ।
८. नवीन वस्त्र धारण व अलंकरण-धारण ।
९. यज्ञ-पूर्णाहुति ।
१०. आचार्योपदेश ।
११. ब्रह्मचारी का विशेष स्वागत ।
१२. आचार्य का स्वागत ।

उपर्युक्त विधियों में अंतिम तीन का विशेष महत्त्व है । इन्हें हम क्रम से समझें

-

१. आचार्योपदेश- महर्षि दयानन्द ने आचार्य को वह प्रतिष्ठा दी कि वह आचार्य वहाँ यथोचित उपदेश दे जिससे वह विवाह हेतु उत्सुक हुये युवक पूर्णतया साँसारिक व्यवहारों में सफल होकर एक श्रेष्ठ सद् गृहस्थ बने तथा परिवार, समाज व राष्ट्र के प्रति उचित दायित्व निभा सके । इस उपदेश का एक झलक महर्षि दयानन्द द्वारा सत्यार्थ प्रकाश के तीसरे समुल्लास में दिग् दर्शित है । यह तैत्तिरीय आरण्यक प्रपाठ ७/अनु.११/कं.१-४ का वचन है - "सत्यं वद । धर्मं

चर..... एष आदेश । एष उपदेश एवमु चैतदुपास्यम् ।” इसका हिन्दी अनुवाद इस प्रकार है ।

“ सत्य बोलो । धर्माचरण कर । स्वाध्याय से प्रमाद न कर । आचार्य हेतु दक्षिणारूप धन देकर विवाह कर के सन्तानोत्पत्ति कर । सत्य को मत छोड़, धर्म को न त्याग, कुशल व्यवहार से आलस्य मत कर, आरोग्य, चतुराई. ऐश्वर्य-वृद्धि, स्वाध्याय, प्रवचन, माता-पिता आदि वृद्ध जनों की सेवा व अभिवादन से आलस्य कभी न करना । मातृ सेवक तथा पितृ सेवक बनकर आदर्श पुत्र बन । आचार्य, अतिथि, संन्यासी आदि श्रेष्ठ जनों का आदर कर किन्तु उनके अगर कोई निन्दित अधर्मयुक्त आचरण है तो उन्हें मत मान । उनके सुचरित को ही धारण कर । पापाचरण को कभी नहीं मान । धर्मात्मा विद्वान् के पास बैठना, उन पर विश्वास कर धर्माधर्म का निर्णय करना ।

श्रद्धा से देना, अश्रद्धा से देना, शोभा, लज्जा, भय, लोक-लाज, प्रतिज्ञा, विनय, आदि जैसे भी हो, लोक-कल्याण हेतु यथाशक्ति दान अवश्य देना । हर प्रकार की शंका का समाधान विद्वान् धर्मात्मा संन्यासी के धर्म-मार्ग पर चलकर उनसे मिलकर ही करना चाहे वह शंका पारिवारिक, सामाजिक या राष्ट्रीय ही क्यों न हो । कर्मशील बन सदैव उत्तम वृत्तियों का स्वामी बनना ।

हे वत्स ! यही हमारा आदेश है, यही उपदेश है, यही वेद की उपनिषद् (सुखद शिक्षा) है, यही अनुशासन (व्यावहारिक अन्तिम शिक्षा) है । इसी तरह तुझे जीवन में सदा रहना चाहिये ।

इस प्रकार संस्कारित युवक प्रथम ब्रह्मचर्य, द्वितीय पूर्ण शिक्षा व विद्या को पाये और तृतीये युवावस्था को पाते हुये सूर्य के समान प्रकाशमान होकर विवाहित होकर संसार में शोभा पावें । इन उपदेशों का पालन करने से राष्ट्र के हर युवा-

युवती ऐसा ही होंगे ।

हम यह गर्व से लिखते हैं कि आज भी विश्वविद्यालयों के दीक्षान्त समारोह पर लगभग ऐसा ही उपदेश के साथ युवक-युवतियों को उपाधि (डिग्री) दी जाती है । कुलपति(आचार्य) द्वारा यहाँ इस उपाधि की उपयोगिता एवं इससे जीवन की सफलता हेतु आशीर्वाद/शुभकामना की गयी जो एक वैदिक परम्परा है । इस प्रचलित विधि से भी यह सिद्ध है कि दुनियाँ की सबसे पुरानी सँस्कृति वैदिक सँस्कृति ही है जो अपनी विधा में न्यूनाधिक जीवन्त है; जो परम्परा से चली आ रही है ।

स्नातक-भेद- यह उल्लेख करना उचित ही होगा कि स्नातक तीन तरह से बनते हैं । विश्वविद्यालय से शिक्षा लेकर जब ब्रह्मचारी बाहर निकलते हैं तब वे तीन विधा से स्नातक बनते देखे जाते हैं-१. विद्या से, २. व्रत से, ३. विद्या और व्रत दोनों से अतः, वे तीन भागों में बाँटे गये हैं-विद्या-स्नातक, व्रत-स्नातक और विद्या-व्रत स्नातक । महर्षि दयानन्द ने भी इसे माना-देखें-सँस्कार विधि-समावर्त्तन सँस्कार । पारस्कर गृह्य सूत्र-प्रमाण-त्रयः स्नातकाः भवन्ति-विद्यास्नातको व्रतस्नातको विद्याव्रतस्नातकश्चेति-पा.२/५/३२-३५

--- विद्या-स्नातक-केवल विद्या पूरी करता है ।

--- व्रत-स्नातक- जो केवल ब्रह्मचर्य व्रत को पूरा करता है ।

--- विद्याव्रत स्नातक- स्नातक का मूल अर्थ है-स्नान किया हुआ । जो ब्रह्मचारी विद्या व्रत और ब्रह्मचर्य व्रत दोनों का विधिवत् पालन कर शिक्षा पूरी करता है तब वह विद्या व्रत स्नातक कहलाता है । स्नातक को अँग्रेजी में ग्रेजुएट कहते हैं । अतः हम कह सकते हैं कि वही ग्रेजुएट श्रेष्ठ है जिसने गुरु के आश्रम/ विश्वविद्यालय में रहकर ब्रह्मचर्यपूर्वक मेहनत और लगन से अपनी शिक्षा/डिग्री पूरी की हो । यह अनुशासन युवा-युवति सब के लिये अत्यन्त उपयोगी है ।

अथर्ववेद ११.२४.१६.२६ का प्रमाण द्रष्टव्य है- “तानि कल्पद् ब्रह्मचारी शलिलस्य पृष्टे तपोऽतिष्ठत् तप्यमानः समुद्रे । स स्नातो बभूः पिंगलः पृथिव्यां वहुरोचते ।” समावर्तन संस्कार में इस मंत्र का हवाला करते हुये महर्षि दयानन्द ने इस का अर्थ इस प्रकार किया है - जो ब्रह्मचारी समुद्र के समान गंभीर बड़े उत्तम व्रत-ब्रह्मचर्य में निवास कर महातप को करता हुआ वेद पठन, वीर्य-निग्रह, आचार्य के प्रियाचरणादि कर्मों को पूरा कर विद्या को पूर करता है, वही विधिवत् स्नातक बन सुन्दर वर्णयुक्त होकर अनेक गुण-कर्म-स्वभाव से प्रकाशमान होता है , वही धन्यवाद के योग्य है । महर्षि के विचार से इस तरह के ब्रह्मचारी ही विद्या और व्रत दोनों से नहाया हुआ स्नातक योग्य और श्रेष्ठ है ।

आचार्य का सत्कार- इस संस्कार का अंतिम मुख्य विन्दु है- आचार्य का सत्कार । ब्रह्मचारी के पिता द्वारा आचार्य के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने की एक विधा है । महर्षि दयानन्द लिखते हैं-“ संस्कार में आये हुये आचार्य का उत्तम अन्न-पान आदि सत्कारपूर्वक भोजन कराके ब्रह्मचारी और उसके माता-पिता आदि आचार्य को उत्तम आसन पर बैठाकर मधुपर्क (शहद+दही आदि) देकर सुन्दर पुष्पमाला ,वस्त्र, गोदान, धन आदि की दक्षिणा यथाशक्ति देकर, सबके सामने आचार्य के उत्तम गुणों की प्रशंसा करें । उनके विद्या दान की कृतज्ञता सबको सुनावें” । यहाँ ब्रह्मचारी विशेष रूप से आचार्य का गुण-गान कुछ इन शब्दों में करता है- ऋषि दयानन्द द्वारा संस्कार विधि में प्रस्तुत वाक्यों का दिग्दर्शन करें-

“ सुनो भद्र जनों ! इस महाशय आचार्य ने मेरे पर बड़ा उपकार किया है जिसने मुझको पशुता से छुड़ा उत्तम विद्वान् बनाया है, उसका प्रत्युपकार मैं कुछ भी नहीं कर सकता । इसके बदले मैं अपने आचार्य को अनेक धन्यवाद दे, नमस्कार कर प्रार्थना करता हूँ कि जैसे आपने मुझको उत्तम शिक्षा और विद्या दान देके कृत-कृत्य किया, उसी प्रकार अन्य विद्यार्थियों को भी कृत-कृत्य करेंगे; और जैसे आपने मुझको विद्या देके आनन्दित किया है, वैसे मैं भी अन्य विद्यार्थियों को

कृत-कृत्य और आनन्दित करता रहूँगा और आपके किये उपकार को कभी न भुलूँगा । सर्वशक्तिमान जगदीश्वर आप, मुझ और सब पढ़ने-पढ़ाने हारे तथा सब संसार पर अपनी कृपा दृष्टि से सबको सभ्य , विद्वान्, शरीर और आत्मा के बल से युक्त , और परोपकार आदि शुभ कर्मों की सिद्धि करने-कराने में चिरायु, स्वस्थ, पुरुषार्थी, उत्साही करें कि जिससे इस परमात्मा की सृष्टि में उसके गुण-कर्म-स्वभाव के अनुकूल अपने गुण-कर्म-स्वभावों को करके धर्मार्थकाम और मोक्ष की सिद्धि कर-करा के सदा आनन्द में रहें ।”

इस प्रकार हम देखते हैं कि यह इस समावर्तन सँस्कार में आचार्य और शिष्य का कैसा भावनात्मक मेल है जो अमृत तुल्य है जिससे दोनों ही एक ही साथ इसे पीकर तृप्त हो गये हों । साथ में उपस्थित माता-पिता भी इस अमृत से तृप्ति पा रहे हों । हमें पूर्ण विश्वास है कि इसी विधा से इस धरती के ब्रह्मचारी और आचार्य दोनों को अपने दायित्वों को एक सफल रूप देने हेतु सदैव प्रबल प्रेरणा, उत्साह, प्रसन्नता जैसे मनोबल प्राप्त होता है जिससे सब ओर से परिपक्व योग्य युवा -युवति का होना सम्भव है ।



ओ३म्

विगत मास के कार्यक्रमों का विवरण

वेद-कथा (रक्षावन्धन, कृष्ण-जन्माष्टमी एवं पातँजल-योग) तथा गायत्री
महायज्ञ -2015

१. वेद कथा- यह पवित्र कार्यक्रम “श्रावणी उपाकर्म” २९ अगस्त से ५ सितम्बर तक प्रत्येक सायं ७.३० से ९.०० वजे तक विधिवत् चला । इस कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण रहा-आचार्य मनोज कुमार शास्त्री (पटना-बिहार, भारत) का सरस, सार्थक, सैद्धान्तिक और सरल भजनोपदेश । इसके साथ ही महर्षि पातँजलि के योग दर्शन के जीवनोपयोगी व्यावहारिक सन्दर्भों की प्रभावशाली विशद व्याख्या आचार्य डॉ. उमेश यादव स्थानीय आवासीय वैदिक विद्वान् द्वारा अत्यन्त सरल ढंग से प्रवचनात्मक शैली में की गयी । प्रति दिन पहले लगभग एक घंटा भजनोपदेश होता रहा और फिर १/२ घंटा योग-सूत्रों पर व्यावहारिक प्रवचन आचार्य उमेश जी द्वारा होता रहा । इसमें रोजाना हल्का भोजन, चाय-पानी की भी व्यवस्था विभिन्न परिवारों द्वारा की गयी । प्रारम्भ डॉ. उमेश कथूरिया-परिवार द्वारा भोजन व्यवस्था से हुआ, फिर क्रमशः श्री सत्यप्रकाश गुप्ता, श्री राजीव दत्ता, श्री संजीव महेन्द्रु, श्री बृज भूषण अग्रवाल, डॉ. अरविन्द शर्मा, श्री कृष्ण चोपड़ा द्वारा और अंतिम संध्या पर डॉ. नरेन्द्र कुमार-परिवार द्वारा भोजन व्यवस्था की गयी ।

आचार्य मनोज कुमार शास्त्री एक कुशल भजनोपदेश एवं डी. ए. वी. स्कूल,पटना के सफल धर्माचार्य हैं । आप हिन्दी एवं संस्कृत के एम.ए. तो हैं ही, साथ ही दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार के स्नातक भी हैं । वैदिक सिद्धान्तों पर भजन प्रस्तुत करने की आपकी योग्यता सहज ही उभर आयी है । आपने ईश्वर-

महिमा, सद् गृहस्थ, स्वस्थ समाज, सुखी राष्ट्र, भारतीय सँस्कृति, वैदिक सँस्कृति, वर्णव्यवस्था, भाई-बहन-सम्बन्ध तथा योगी राज कृष्ण की महिमा आदि विषयों पर बहुत ही रोचक भजन सुनाये । आचार्य उमेश जी ने भी योग दर्शन के चारों पादों पर विस्तार से प्रवचन की शैली में व्याख्या की और बताया कि कैसे हमें अपनी चित्तवृत्तियों को साकारात्मक नियन्त्रण देना है और परमात्मा की ओर उन्हें मोड़ना है । यम (सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह), नियम (शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर-प्रणिधान/उपासना), आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि इन योग के आठ अंगों की बड़ी ही सारगर्भित व्याख्या की । समाधि के भेद (सम्प्रज्ञात समाधि-असम्प्रज्ञात समाधि), योग-साधना की रुकावटें, इसके साधन/ तरीकें, योग से उपलब्धियाँ जो सम्भव हैं और योग से मोक्ष सुख को पाना जो लगभग ३१ नील, १० खरब, ४० अरब वर्ष तक है जिसे एक मानव वर्ष की संज्ञा दी गयी है-इत्यादि स्पष्ट रूप से अपने प्रवचनों में बताया । विस्तृत ज्ञान के लिये आर्य समाज के पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकें पढ़ें, ऐसा परामर्श भी दिया ।

वेद कथा का प्रारम्भ आचार्य मनोज जी के स्वागत से हुआ और इसका अन्त भी आर्य समाज के ट्रस्टी-प्रधान मान्य डॉ. नरेन्द्र कुमार द्वारा आचार्य मनोज शास्त्री एवं आचार्य उमेश यादव जी को पुष्प-गुच्छों के भेंटपूर्वक अभिनन्दन से सम्पन्न हुआ । यह उल्लेखनीय है कि पुष्प-गुच्छों की व्यवस्था अपनी श्रद्धा से श्री धनसुख राणा जी ने की जिन्होंने मान्य प्रधान डॉ. नरेन्द्र कुमार के हाथों से दोनों आचार्यों को भेंट करवाया । यह कार्यक्रम निसंदेह अत्यन्त सुखद, मनोहारी, सार्थक तथा ज्ञानवर्धक रहा । सभी श्रद्धालु श्रोताओं में फिर से योग दर्शन को विधिवत् पढ़ने की उत्कंठा जागृत हो गयी और ऐसे कार्यक्रम भजनोपदेश एवं प्रवचन होते ही रहें-ऐसी भावना सब के द्वारा दर्शायी गयी । इस कार्यक्रम की सफलता विना श्रोतागण के नहीं हो सकती थी । प्रति सायं इनकी सँख्या बढ़ती रही और लगभग ४५-५० की सँख्या में आने लगे । भजनोपदेश का अनुभव

प्रथमवार ही हुआ यहाँ, अच्छा लगा; आशा है आगे भी आप सब का सहयोग रहा तो चलता ही रहेगा-ऐसा पवित्र उद् गार मान्य प्रधान जी ने अपने समापन धन्यवाद -वोध में अभिव्यक्त किया ।

यह भी बताना उचित ही होगा कि मान्य भजनोपदेशक मनोज जी एवं आचार्य उमेश जी के कार्यक्रम एक दिन वृहस्पतवार (थर्सडे) ३.०९.२०१५ को ११.०० से १.०० वजे के सत्र में लक्ष्मी नारायण मन्दिर, वारिकरोड तथा एक रविवार ६.०९.२०१५ सायं ५.०० से ७.०० वजे माता-मन्दिर डड्डली में भी रखा गया । वे कार्यक्रम भी अत्यन्त सफल व सार्थक हुये । इन दोनों संस्थाओं के पदाधिकारियों के प्रति इस के लिये आर्य समाज वेस्टमिड्लैंड्स, बर्मिंघम हार्दिक आभार प्रकट करता है ।

गायत्री महायज्ञ -2015 - आर्य समाज वेस्टमिड्लैंड्स में यह कार्यक्रम हर वर्ष एक महत्त्वपूर्ण अनुष्ठान के रूप में बड़े उत्साह, श्रद्धा व ईश्वर के प्रति समर्पण भाव से किया जाता है । इसमें चार हवनकुड होते हैं, तीन बारी लगती है और सभी श्रद्धालु भक्त श्रद्धा से अपनी-अपनी बारी में आहुतियाँ डालते हैं ।

आचार्य सबके जीवन की खुशियों के लिये प्रार्थना करते हैं । इन सब अनुशासनों के साथ इस वर्ष भी यह महायज्ञ -समारोह मनाया गया । इसका संचालन आचार्य डॉ. उमेश जी ने किया । बहुत ही आह्लादित व आध्यात्मिक मुद्रा में यह अनुष्ठान सम्पन्न हुआ । बीच-बीच में आचार्य जी सन्दर्भित मन्त्रों का सरल भाषा में अर्थ समझाते रहे जिससे उपस्थित भक्त जनों में रुचि बनी रही । इसका प्रारम्भ संस्था के प्रधान डॉ. नरेन्द्र कुमार और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सामा

कुमार एवं कार्यक्रम में उपस्थित होने वाले श्रद्धालुओं के लिये भोजन-व्यवस्थापक/दाता (स्पोसर) श्री हरीश मलहोत्रा व श्रीमती गगन (उर्फ गायत्री)

मलहोत्रा की अनुसंशा से किया गया । इसमें लगभग १५० लोग उपस्थित हुये तथा अनुष्ठान में भाग लेने वाले श्रद्धालुओं ने दिल खोलकर दान भी अपनी-अपनी श्रद्धा से दिया जो लगभग १४०० पौंड की धन-राशि प्राप्त हुयी । इस दिन भी भारत से आये प्रतिष्ठित भजनोपदेशक मान्य आचार्य मनोज कुमार शास्त्री का यज्ञ की महिमा तथा ईश्वर-भक्ति के सरस भजन हुये ।

यह उल्लेखनीय है कि गायत्री महायज्ञ की पूर्णाहुति के बाद “ओ३म्-ध्वज” फहराया गया जिसमें मान्य वयोवृद्ध इस आर्य समाज के संरक्षक श्री गोपालचन्द्र तथा संस्था-प्रधान डॉ. नरेन्द्र कुमार ने मिलकर ध्वजारोहण किया । आचार्य उमेश जी ने इसे विधिपूर्वक मंत्रोच्चारण “ आ ब्राह्मण ब्रह्मणो ब्रह्मवर्चसी” के साथ सम्पन्न करवाया । मान्य मनोज शास्त्री ने “जयति ओ३म्-ध्वज व्योम्-विहारी” प्रेरक गीत गाया जिसे सब उपस्थित लोगों ने भी सिरकत की । पूर्णाहुति के बाद सबको हलवे तथा फल का परसाद भी बाँटा गया जिसमें फल की व्यवस्था डॉ. नरेन्द्र एवं सामा कुमार की ओर से थी और हलवा का निर्माण गगन मल्होत्रा, दीपिका दत्ता एवं सामा कुमार ने मिलकर किया ।

अन्त में संस्था-प्रधान डॉ. कुमार ने सबको हार्दिक धन्यवाद दिया । सबका स्वागत करते हुये उन्होंने कहा कि इस महायज्ञ में भाग लेने वाले सभी यजमानों, श्रद्धा से दान देने वाले सभी दानियों, यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य उमेश जी, भारत से आमन्त्रित भजनोपदेशक आचार्य मनोज जी तथा, महायज्ञ हेतु पूरा घी -दाता श्री राजेश कुमार व उनका परिवार, सभी सेवा-प्रदान करने वाले निष्ठावान सेवक-दल तथा सम्पूर्ण कार्यक्रम के भोजन-दाता श्री हरीश मल्होत्रा एवं उनका परिवार को बहुत ही हार्दिक धन्य वाद देता हूँ जिनके सम्मिलित सहयोग से ही यह सब कार्यक्रम सकुशल सम्पन्न हुआ । परम्परानुसार शांति-पाठ, जयघोष एवं भोजन-मंत्र-पाठ के साथ हर्षोल्लास के साथ कार्यक्रम की समाप्ति की गयी । पश्चात् सबने प्रेम से मिलकर प्रीति-भोज किया ।

Celebration of Independence Day of India

On 16th August 2015 we celebrated Independence Day of India in Arya Samaj West Midlands Bhavan. Honourable Shri Jitendra Kumar Sharma, Consul General of India, was our chief guest.

Mr. Shailesh Joshi, a trustee of our Arya Samaj, was the Comperere of this function. More than 150 people attended this function.

Indian National flag was hoisted by our Patron Mr. Gopal Chandra MBE. This was followed by singing of Indian national anthem by all present.

Dr. Narendra Kumar, Chairman of the Board of Trustees, welcomed and congratulated the guests and audiences. He told the audience that Maharishi Swami Dayanand Saraswati, the founder of Arya Samaj, was the first person to use the word "Swaraj" self rule in his famous book. Satayarth Prakash. Maharishi Swami Dayanand Saraswati should be called grandfather of India. Dr. Kumar also told the audience about the first principle of Arya Samaj "God is the primary source of all true knowledge and all that is known by its means." This true knowledge is written in four Vedas. But our Western and Indian societies have been ignoring this knowledge. He told the audience that it is prime duty of Arya Samaj to propagate the knowledge of Vedas to the world.

The students of Dr. Jessica performed two Indian classical dances based on patriotic songs. Their performance was well appreciated by the audience.

Mrs. Swaran Talwar recited a patriotic poetry.

Honourable Consul General of India Shri Jitendra Kumar Sharma told the audience about the messages from President and Prime Minister of India and the progress India is making. A dignitary from India Acharya Anand Purusharthi recited a mantra and explained to the audience about importance of giving respect to elders, giving hug and love to friends and affectionate love to children in the community. He also presented some religious books to Consul General of India.

Our valued life member Mrs. Nirmal Devi Prinja sang a patriotic song.

Acharya Umesh Yadav spoke about the importance of a nation as written in Vedas. He also recited a melodious poetry.

In the end Dr. Arvind Sharma thanked Consul General of India, other dignitaries, the participants and the audience for making this function a success. He also thanked Mr. Shailesh Joshi for presenting the whole programme in a very efficient and organised way.

The Rishi Langer for the day was sponsored by our valued life member Mr. Joginder Pal Sethi.

The function concluded by singing Arti and reciting Shanti path.



Vedic Matrimonial Get-Together

Matrimonial get together was held at Arya Samaj Birmingham on Saturday, 19th of September 2015. Event started at 11.00am and finished by 4.00pm followed by late lunch where participants had more time to know each other.

Acharya ji started the event with prayer followed by speed dating format of introducing participants to each other.

It was a popular event and 48 people participated in this get -together. It was a well organized event with good feed back and all the participants liked the format (speed dating) as well as support provided during the event.

The only down side was that some participants that had signed up for the event and did not turn up on the day and some of them did not even call to inform us, this is a shame for the other participants who have travelled long distances for this event

Our office manager Raji worked hard to make this event a success. Mrs Manorama Jobanputra along with Vineet, Rakhee, Hema, Acharyaji, Saantiji, Paven, Dharmesh, Dinesh, Mina and Rana ji provided support during and before the event. Mr Harish Malhotra provided excellent catering support.

By the end of event there have been quite a few interests shown between the participants and we had around 30 matches on the day. Whom we hope will change into life long partnerships.

We will be arranging a similar get together next year. Please watch out for more information in forthcoming monthly Aryan Voice.

Dr Arvind Sharma – Secretary Board of Trustees

Charity Dinner

Bolloywood Nite!

Saturday 7th November 2015

Doors open 6.30pm – Till Late

At

**Arya Samaj (Vedic Mission) West Midlands
188 Inkerman Street (off Erskine Street), Nechells,
Birmingham, B7 4sa**

Tickets £20 per person

3 Course Vegetarian Meal

**Come enjoy the evening with singers Mr Hitesh and
Mrs Rama Jobanputra and Live Band**

**For more information and to buy tickets please call
TEL: 0121 359 7727**

Or

E-mail- enquiries@arya-samaj.org

A show NOT to be MISSED.....

News

Donations to Arya Samaj West Midlands

- Mrs. Anita Rastogi & Mr. Garreth Jones £500
- Mr. J. Sanger £61
- Mr. Ravindra Renukanta £21
- Mr. Prem Kharbanda £10
- Dr. Arvind Sharma for ved katha food £105
- Mrs Rama Joshi £10
- Mr. S.P. Gupta for ved katha food £70
- Mrs. Asha Verma £5+£5= £10

Donations to Arya Samaj through Priest Services.

- Mr. Pulkit Ahuja £42
- Mr. Jitender Kumar Batta (Shammi) £51
- Mr. Amit Khanna £101
- Mr. Adarsh Sharma £21
- Mr. Ashok Kumar Panday £51
- Mr. Vijay Sharma £51
- Dr. Gautam Rajkhoiya £51
- Mr. Lav Datta £21

Donations for Gayatree Maha Yajna on 06.9.2015 in Arya Samaj West Midlands

- Mrs. Sunita and Ashok Bakshi £21
- Mrs. Kanti Bajaj £101

- **Mr. Satya Prakash Gupta** **£101**
- **Mrs. Usha Jain** **£10**
- **Dr. Narendra Agarwal** **£11**
- **Mrs. Usha J.** **£11**
- **Mrs. Usha Sood** **£11**
- **Miss Pallavi Pandya** **£10**
- **Mr. Amit Khanna** **£11**
- **Mr. Inderjit Marwaha** **£10**
- **Mrs. Neelam Sethi** **£21**
- **Mr. Shailesh & Chetna Joshi** **£101**
- **Mr. Harish Malhotra –for Rishi Langar GMY** **£501**
- **Mr. & Mrs. S.P. Vohra** **£10**
- **Mrs. Neera Shukla** **£10**
- **Mr. Rajiv Datta & family** **£21**
- **Mrs. Gagan Malhotra** **£101**
- **Dr. Arvind Sharma** **£31**
- **Mrs. Dr. Rani Kumar** **£10**
- **Mr. Inderjit Sharma** **£20**
- **Dr. P.D. Gupta** **£21**
- **Mrs. Kailash Sapolia** **£11**
- **Mr. Iqbal Singh** **£11**
- **Mrs. Asha Verma** **£11+£5 = £16**
- **Mrs. Kamlesh Arora** **£11**
- **Mrs. Vimla Dodd** **£21**
- **Mr. Rajnish Verma** **£20**
- **Miss Sukhnam Verma** **£10**
- **Mr. Ravinder Renukanta** **£21**
- **Miss C.P. Snatak** **£10**
- **Miss Rekha Gore** **£21**

- **Mr. Ashvini Vig** **£20**
- **Dr. Narendra Kumar & family** **£100**
- **Mr. Raj Joye** **£20**
- **Mr. J.P. Sethi & family** **£51**
- **Mrs. Nirmal Prinja** **£21**
- **Mrs Isha and Mr. Vikas Bali** **£11**
- **Mrs. Chanchal Jain** **£11**
- **Mrs. Surinder Agarwal** **£11**
- **Mrs. B Sengupta** **£21**
- **Mr. Rajive & Puja Bali** **£21**
- **Mrs. Yashica & Mr. Vipul Bali** **£11**
- **Mrs. Ved Datta** **£21**
- **Mr. Varinder Kumar Bahal** **£21**
- **Mrs. Sudarshan Arora** **£21**
- **Mrs. K & S.P. Datta** **£21**
- **Varma family** **£20**
- **Dr. Umesh Kathuria** **£51**
- **Dr. Roshan Bhoojiawan** **£20**

Many thanks for being yajmans and making donations to ASWM in Gayatree Maha Yajna on 06.09.2015 and at your houses for celebrating various occasions too. May God bless all of you for all prosperities, happiness and good health.

**Please contact Acharya Dr Umeh Yadav on
0121 359 7727
for more information on**

- **Member or non member wishing to be a Yajman in the Sunday congregation to celebrate an occasion or to remember a departed dear one.**
- **Have Havan, sankars, naming, munden, weddings and Ved Path etc performed at home.**
- **Our premises are licensed for the civil marriage ceremony.**
- **Please join in the Social group at Arya Samaj West Midlands every Wednesday from 11am. Emphasis is on keeping healthy and fit with yoga and Pranayam. Hot vegetarian Lunch is provided at 1pm.**
- **Ved Prachar by our learned Priest Dr Umesh Yadav on Radio XL 7 to 8 am, first Sunday of the month. Next 4th October 2015 & 1st November 2015**

Every effort has been taken that information given is correct and complete. But if any mistake is spotted please inform the office.

0121 359 7727

E-mail- enquiries@arya-samaj.org

Website: www.arya-samaj.org

Experienced Head Teacher wanted

Experienced Head Teacher wanted for an exciting Free Primary School project.

The Arya Samaj (Vedic Mission) West Midlands is in the process of applying to open a Free Primary School in Birmingham in September 2016.

We are looking for a Head Teacher to advise us through application process and School's Educational plan and to help set the strategic vision for the School based on our core values and the new national curriculum.

Have you:

- Successfully led a Primary School to Ofsted rating good or outstanding?
- Recently retired or moved away from headship?
- Got time and passion to be involved something new?

If you are interested, we would be delighted to hear from you.

Please get in touch by phoning on 0121 3597727 or email at enquiries@arya-Samaj.org. You can call us for an informal chat.

We are willing to pay a fee for your time.